तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

तृतीय अध्याय : शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना
3.2 चर का अर्थ
3.2.1 चर के प्रकार
3.3 शोध के प्रयुक्त चर
3.4 समष्टि की परिभाषा
3.5 न्यादर्श का चयन
3.6 जनसंख्या
3.7 प्रतिदर्श
3.8 प्रतिदर्श चयन की विधि
3.9 प्रतिदर्श की संख्या
3.10 प्रदत्तों का विश्लेषण
3.11 शोध उपकरण

अध्याय तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

शिक्षा संबंधी प्रत्येक परिघटना में बहुत सारी इकाइयाँ होती हैं नियंत्रित परिस्थितियों में सर्विस वैद्यता प्राप्त नियमों की रचना के लिए समस्टि की प्रत्येक इकाई का परीक्षण साक्षात्कार या प्रेक्षण असम्भव नहीं तो अव्यवहारिक अवश्य हैं। कुछ समष्टियाँ इतनी बडी होती हैं कि उनका अध्ययन करते समय, धन, प्रयास व जनशक्ति का अनावश्यक व्यय होगा।

प्रतिचयन ऐसी प्रकिया है जिसमें अपेक्षाकृत छोटी संख्या में, व्यष्टि उनके माप वस्तुएँ या घटनाएँ छॉट ली जाती हैं और उनका विश्लेषण करके ऐसे परिणाम निकाले जाते हैं जो पूरी समष्टि के लिए सही हैं।

3.2 चर का अर्थ

शैक्षिक शोध में चर का काफी महत्वपूर्ण स्थान है चर जैसा कि नाम से ही बहुत कुछ स्पष्ट है वह है जिसका मान परिवर्तित होता रहता है। मनोवैज्ञानिक शोध से चर थोड़ा विशिष्ट अर्थ में प्रयोग होता है। यहाँ चर से तात्पर्य वस्तु, घटना तथा चीज के उन गुणों से होता है जिन्हें मापा जा सकता है।

करालिंगर (1924) के अनुसार :– "चर एक ऐसा गुण होता है कि जिसकी अनेक मात्राएं हो सकती हैं।"

3.2.1 चर के प्रकार चर दो प्रकार के होते हैं – स्वतंत्र एवं आश्रित चर।

3.3 शोध के प्रयुक्त चर

(1) स्वतंत्र चर :– सामाजिक आर्थिक स्थिति।

(2) आश्रित चर :– लैंगिक अभिवृत्ति, भावनात्मक बुद्धि

3.4 समष्टि की परिभाषा(Defining the Population)

समष्टि से तात्पर्य, कुछ विशिष्ट मनुष्यों के समुदाय, अमानवी इकाइयों जैसे वस्तुओं, शिक्षा, संस्थाओं, समय, ईकाई, भौगोलिक क्षेत्र, गेहूँ के मूल्य, व्यक्तिगत वेतन से होता है।

3.5 न्यादर्श का चयन

किसी भी अनुसंधान में प्रतिदर्श का चुनाव एवं उनकी संस्था महत्वपूर्ण पहलू होता है। शोधार्थी के लिए यह आवश्यक होता है कि आंकडों को कहाँ से कैसे प्राप्त किया जाये इसके लिए पहले न्यादर्श का चयन करना आवश्यक होता है। किसी भी अनुसंधानकर्ता को अपने शोधरूपी भाव को बनाने के लिए न्यादर्श रूपी आधारशिला की आवश्यकता होती है। यह आधार शिला जितनी मजबूत होगी शोध कार्य उतना ही सुदृढ़ होगा।

किसी भी अनुसंधान कार्य में प्रतिदर्श का चुनाव एवं उसकी संख्या महत्वपूर्ण पहलू होता है। प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा का ध्यान रखते हुए प्रतिदर्श को उददेश्यपूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

3.6 जनसंख्या :– कक्षा 9 वीं के विद्यार्थी।

3.7 प्रतिदर्श :– भोपाल जिले के केन्द्रीय विद्यालय और निजी विद्यालय से प्रतिदर्श का चयन किया गया है।

3.8 प्रतिदर्श चयन की विधि :– सरल यादृच्छिक विधि द्वारा प्रतिचयन किया गया।

3.9 प्रतिदर्श की संख्या

केन्द्रीय विद्यालय से कक्षा 9 वीं से 25 छात्रों और 31 छात्राओं का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया। और निजी विद्यालय से कक्षा 9 वीं के 21 छात्र एवं 30 छात्राओं का चयन किया गया।

3.10 प्रदत्तों का विश्लेषण :– संगहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया

3.11 शोध उपकरण

(1) सामाजिक–आर्थिक स्थिति परिसूची इसका निर्माण डॉ. ज्ञानेन्द्र पी. श्रीवास्तव द्वारा किया गया है। यह एक प्रमाणित शोध उपकरण है।

(2) लैंगिक अभिवृत्ति.यह उपकरण स्वनिर्मित है।

(3) भावनात्मक बुद्धि परिसूची .इसका निर्माण डॉ. अनिता सोनी प्राधानाचार्य और डॉ. अशोक शर्मा द्वारा किया था । यह एक प्रमाणित शोध उपकरण है।